

**लक्ष्यभेदी वि.** (तत्.) 1. लक्ष्य का भेदन करने वाला 2. निशाना लगाने वाला, निशानेबाज 3. अपने लक्ष्य/उद्देश्य को प्राप्त करने वाला पुं. 1. लक्ष्य भेदन में निपुण व्यक्ति 2. निशाना लगाने वाला व्यक्ति 3. अपना लक्ष्य प्राप्त करने में सिद्ध व्यक्ति।

**लक्ष्यसिद्धि स्त्री.** (तत्.) 1. इष्ट लक्ष्य/उद्देश्य की प्राप्ति 2. उद्देश्य प्राप्ति की सफलता, लक्ष्य के सिद्ध होने की स्थिति।

**लक्ष्यार्थ पुं.** (तत्.) काव्य. 1. शब्द की लक्षणा शक्ति द्वारा प्राप्त होने वाला अर्थ 2. शब्द का लाक्षणिक अर्थ।

**लक्ष्योपमा स्त्री.** (तत्.) काव्य. 1. उपमा अलंकार का एक भेद जिसमें उपमान और उपमेय को समान वाचक शब्दों का प्रयोग किये बिना केवल लक्षण मात्र के कथन से प्रकट किया जाता है 2. अर्थालंकार का एक भेद।

**लखन पुं.** (तद्.) राम का छोटा भाई लक्ष्मण स्त्री. देखने का भाव वि. लक्षण चिह्न, किसी व्यक्ति, वस्तु आदि के कोई गुण, लक्षण या चिह्न जिनके आधार पर उनकी पहचान हो सके।

**लखना स.क्रि.** (तद्.) 1. देखना 2. समझना 3. जान लेना 4. किसी की गतिविधि को देखकर उसके विचारों या भावों को ताड़ लेना।

**लखपती पुं.** (तद्.) 1. लाखों का स्वामी, एक लाख या इससे अधिक रुपये वाला 2. बहुत धनी।

**लखलखा पुं.** (तद्.) 1. सूँघने का एक सुगंधित मिश्रण 2. अंबर, कस्तूरी, अगर, आदि का योग जो बेहोशी दूर करने के काम आता है 3. वह पात्र जिसमें उक्त चीजें रखी जाती हैं।

**लखलुट वि.** (देश.) 1. मौजमस्ती में लाखों रुपये लुटाने वाला 2. अपव्ययी, फिजूल में खर्च करने वाला।

**लखी पुं.** (तद्.) 1. लाख के रंग का घोड़ा 2. लाखी।

**लखेरा पुं.** (तत्.) 1. लाख की चूड़ियाँ बनाने वाला 2. एक हिंदू उपजाति जिसका लाख की चूड़ियाँ बनाना स्वाभाविक या पैतृक व्यवसाय हो।

**लखौट स्त्री.** (देश.) स्त्री के हाथ में पहने जाने वाली लाख की चूड़ियाँ।

**लखौटा पुं.** (देश.) 1. लिखावट, लेखपत्र 2. लाख की चूड़ी 3. सिंदूर की डिबिया 4. चंदन, केसर आदि से बनाया जाने वाला उबटन।

**लखौरी स्त्री.** (देश.) 1. भँवरी का घर, मिट्टी का घरौंदा 2. पुराने ढंग की छोटी तथा पतली ईंट, नौ तेरही ईंट, ककैया ईंट, (पहले इन्हें एक लाख की संख्या में खरीदा जाता था) 3. किसी देवता की आराधना में उसके प्रिय वृक्ष के पत्ते या फूल एक लाख की संख्या में चढ़ाना, अर्पित करना।

**लखते-जिगर पुं.** (फा.) 1. जिगर का टुकड़ा 2. पुत्र।

**लग क्रि.वि.** (देश.) 1. तक, पर्यंत 2. पास, निकट 3. लिए वास्ते, साथ, संग स्त्री. लगन, लौ, प्रेम।

**लगन स्त्री.** (देश.) 1. मन, प्रवृत्ति का किसी ओर लगना, झुकना, किसी व्यक्ति या काम में पूरी तरह ध्यान लगाना अर्थात् केवल उसी के बारे में विचार-मग्न होना 2. लौ, स्नेह, प्रेम, मुहब्बत, प्यार, लगाव 3. लग्न, विवाह का मुहूर्त, हिंदू पद्धति में वे विशिष्ट काल जब विवाह किए जाते हैं 4. मोमबत्ती जलाने की थाली, आटा गूँधने, मिठाई आदि सजाने की थाली, वर के लिए मिठाई आदि भेजने की थाली।

**लगनपत्री स्त्री.** (तद्.) विवाह के मुहूर्त एवं कार्यक्रमों की वह पत्री या पत्र जो कन्या-पक्ष की ओर से वर-पक्ष को भेजी जाती है, लग्न-पत्रिका।

**लगना अ.क्रि.** (तद्.) 1. किसी पदार्थ या पात्र के पृष्ठ या सतह से किसी दूसरे पदार्थ या पात्र के पृष्ठ या सतह का मिलना, सटना, जुड़ना 2. किसी वस्तु पर कुछ अन्य वस्तु का सिलना, चिपकना, जड़ना या मढ़ा जाना 3. सम्मिलित होना, मिलना 4. तल या सीमा या आधार पर